भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र
ICAR - NATIONAL RESEARCH CENTRE ON LITCHI
मुशहरी प्रक्षेत्र, मुशहरी, मुजफ्फरपुर-842002 (बिहार), भारत
Mushahari Farm, Mushahari, Muzaffarpur - 842002 (Bihar) India
फोन Ph: 0621-2289475, 2281161 फैक्स Fax: 0621-2281162

अप्रैल माह में लीची के बागान मे किए जाने वाले कार्य

1. लीची की शाही किस्म में फल लग चुकें हैं यदि फल लौंग का आकार ले चुके हैं तो बागान से मधुमक्खी के बक्सों को हटा दें । चाइना किस्म में यदि फल नहीं लगे हो तो मधुमक्खी के बक्सों को फल लगने तक बाग में ही रहने दे। यदि फल लग चुके है तो मधुमक्खी के बक्सों को हटा दें ।
2. फलो के लौंग का आकार होने पर बाग में हल्की सिंचाई करें ।
3. फल लौंग के आकार होने पर 8–12 वर्ष के पौधों में 350 ग्राम यूरिया एवं 250 ग्राम पोटेसियम सल्फेट का व्यवहार करें और 15 वर्ष के ऊपर के पौधों में 450–500 ग्राम यूरिया एवं 300 से 350 ग्राम पोटेसियम सल्फेट का व्यवहार करें। ध्यान रहें कि उर्वरकों का प्रयोग पर्याप्त नमी होने पर ही करें । छत्रक से 1 मीटर अंदर 15 सेमी चौड़ी एवं गहरी नाली बनाकर उर्वरक का उपयोग करें।
4. मंजर/फल झुलसा एवं अन्य रोग से बचाव के लिए कवकनाशी थायोफेनेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्ल्यूपी 2 ग्राम प्रति लीटर का छिड़काव करें। कवकनाशी दवा को कीटनाशी दवा के साथ मिलाकर छिड़काव नहीं करें ।
5. कीटनाशक दवा का छिड़काव कवक नाशी दवा के छिड़काव के दो दिन बाद ही करें । लीची फल बेधक (बोरर) कीट से बचाव के लिए थीयाक्लोप्रिड (21% एस.सी) 0.6 मिली/लीटर पानी अथवा इमारेक्टिन बेनजोएट (0.5 मिली/लीटर)+फिप्रोनील (1.5 मिली/लीटर) दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें ध्यान रखें कि दवा का छिड़काव फलों के लौंग के आकार के हो जाने के बाद ही करें।
6. फलों को झड़ने से रोकने के लिए फल लगने के 7–10 दिन बाद प्लानोफिक्स 1.0 मिली लीटर/4.5 लीटर पानी में या एन.ए.ए. 20 पीपीएम (20 मिली ग्राम/लीटर) का घोल बनाकर छिड़काव करें। 15 दिन के बाद दूसरा छिड़काव करें।
7. फलों को फटने की समस्या से रोकने के लिए फल लौंग के आकार के हो गए है तो पौधों में बोरेक्स (20%) अथवा जल में घुलनशील बोरॉन का 4 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। बोरेक्स की सही मात्रा का उपयोग करे, अन्यथा नुकसान हो सकता है।
8. उत्तम गुणवत्ता के फल प्राप्त करने के लिए फल लगने के 20–25 दिन बाद गुलाबी/सफेद रंग के नॉनवुवन पॉली प्रोपाइलीन बैंग से गुच्छों को ढ़क दें (लीची के गुच्छों का थैलीकरण करें) ।
9. फलों के पकने तक सिचांई का समुचित प्रबंध कर बाग में नमी बनायें रखे ।

विशेष जानकारी के लिए किसान भाई राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र, मुशहरी, मुजफ्फरपुर में व्यक्तिगत भ्रमण अथवा दूरभाष से संपर्क करके लीची से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ. बिकाश दास, निदेशकः 9431169835
डॉ. विनोद कुमार, प्रधान वैज्ञानिक (पादप रोग विज्ञान): 9162601559
डॉ. सुनील कुमार, वैज्ञानिक (फल विज्ञान) : 8860006741
डॉ. इप्सिता सामल, वैज्ञानिक (कीट विज्ञान): 8920364022

(बिकाश दास)
निदेशक